इकाई 4 पठन कौशल का विकास

संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 पठन तत्परता
4.4 पठन प्रक्रिया : विभिन्न चरण
  4.4.1 श्रव्य बिंबों का निर्माण
  4.4.2 श्रव्य बिंबों के साथ विचारों का संयोजन
  4.4.3 अलग-अलग विचारों का समूह में संयोजन
  4.4.4 शब्द समूहीकरण
4.5 पठन के प्रकार
  4.5.1 मुखर पठन
  4.5.2 मौन पठन
4.6 पठन से संबंधित क्रियाकलाप
  4.6.1 मानचित्र अभ्यास
  4.6.2 श्यामपट्ट अभ्यास
4.7 पठन दोष
4.8 पठन बोध के प्रकार
  4.8.1 तथ्यात्मक बोधन
  4.8.2 निष्कर्षात्मक (आनुमानिक) बोधन
4.9 गहन एवं विस्तृत पठन
4.10 पठन-बोध में आने वाली समस्याएँ
4.11 सारांश
4.12 इकाई के अंत में अभ्यास
4.13 अभ्यासांतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

4.1 प्रस्तावना

पठन भाषा-अर्जन का एक प्रमुख कौशल है। पढ़ने की योग्यता होना आवश्यक है क्योंकि :

i) यह भाषा सीखने की एक विधि है,

ii) इससे हम और अधिक ज्ञान प्राप्त करने के योग्य बनते हैं, और

iii) यह शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास में और समाज में अपना स्थान ग्रहण करने में उसकी सहायता करती है।

एक विख्यात अंग्रेज लेखक ने लिखा है, "पठन व्यक्ति को पूर्ण बनाता है।" अर्थात् मनुष्य पठन क्रिया के द्वारा अपनी पूर्ण क्षमता को प्राप्त करता है।

यह पठन ही है जो हमारे लिए ज्ञान के द्वार खोलता है और हमारे अनुभवों को समृद्ध बनाता है। यह न सिर्फ हमारे सोचने और तर्क करने के ढंग को बेहतर बनाता है बल्कि एक जिज्ञासु मस्तिष्क के विकास को भी उद्दीप्त करता है। इसके अतिरिक्त पठन अपनी साहित्यिक विरासत को उपलब्ध कराने और उसका आनंद प्राप्त करने में भी हमारी सहायता करता है। इस प्रकार भाषा शिक्षण के किसी भी कार्यक्रम में पठन कौशलों के विकास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वास्तविकता तो यह है कि व्यक्तित्व के विकास के अनेक रूपों और सामाजिक प्रगति को प्राप्त करने की दृष्टि से पठन का कोई विकल्प है ही नहीं। इसलिए शिक्षक के रूप में आपका यह दायित्व है कि आप अपने शिक्षार्थियों को पठन कौशल में भली प्रकार दक्ष बनाएँ ताकि वे विद्यालय स्तर पर और बाद में अपने वयस्क जीवन में इन

कौशलों का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें। इस इकाई में पठन कौशल के विविध पक्षों और इन कौशलों के भिन्न-भिन्न पहलुओं के विकास के लिए अपनाए जा सकने वाले विभिन्न उपायों और साधनों पर प्रकाश डाला गया है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- शुद्ध उच्चारण, उचित स्वराघात, बलाघात, अनुतान और उतार-चढ़ाव जैसे विभिन्न पक्षों को पहचान सकेंगे;
- पठन में विराम-चिह्नों के महत्त्व को बता सकेंगे;
- पाठ की प्रकृति के आधार पर पठन में उचित गति और स्वरमान के महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे; और
- पठन से संबंधित विविध क्रियाकलापों से परिचित हो सकेंगे।

4.3 पठन तत्परता

"तत्परता वह अवस्था है जब बच्चे किसी बौद्धिक अथवा सांवेगिक दबाव के बिना कुछ सीखने के लिए पर्याप्त रूप से परिपक्व हो चुके होते हैं और उसे सीख लेने पर संतोष का अनुभव कर सकते हैं।"

भाषा अधिगम की दृष्टि से 'तत्परता' से अर्थ है कि शिक्षार्थी उस अवस्था को प्राप्त कर चुका है कि जब वह पढ़ने और लिखने के कौशलों को सीखने के लिए तैयार है, क्योंकि सुनने और बोलने के कौशलों की तुलना में पढ़ना और लिखना दोनों ऐसे कौशल हैं जिनके लिए औपचारिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की अपेक्षा होती है। इसलिए पढ़ना और लिखना सिखाने में पहले यह वांछनीय है कि शिक्षार्थियों में कुछ ऐसी विशिष्ट दक्षताएँ विकसित की जाएँ जो उन्हें पढ़ने और लिखने के कौशलों को सीखने के लिए तैयार कर सकें। इस इकाई के अंतर्गत हम 'पठन तत्परता' पर चर्चा कर रहे हैं। लेखन तत्परता पर 'लेखन कौशल विकास' इकाई (इकाई 5) के अंतर्गत चर्चा की जाएगी।

पढ़ने की योग्यता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी वर्णमाला को पहचान सकें अर्थात् वर्णों की आकृतियों और बनावट में अंतर कर सके और साथ ही वर्णमाला की विभिन्न ध्वनियों में विभेद कर सकें। इसके अतिरिक्त शिक्षार्थी में यह योग्यता भी होनी चाहिए कि वह प्रत्येक ध्वनि को संबंधित वर्ण से जोड़ सकें। इसके साथ, पठन में सुविधा के लिए उसके पास मानक भाषा का संतोषजनक शब्द भंडार भी होना चाहिए। उसको पुस्तकों की उपयोगिता से भी परिचित होना चाहिए और पठन कौशल के विकास में उसकी रुचि होनी चाहिए।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए पठन तत्परता की योग्यता के विकास से तात्पर्य है कि शिक्षार्थी में ऐसी योग्यता विकसित हो सके कि वह :

i) वर्णों के आकार और आकृतियों में अंतर कर सके और वर्णमाला के विभिन्न वर्णों के घुमावों और आकृतियों की बनावट में विभेद कर सके। उदाहरण के लिए 'इ' के घुमाव और 'ह' के घुमाव तथा 'म' और 'भ' की बनावट में केवल थोड़ा-सा अंतर है। इसी प्रकार 'ध' और 'घ' की बनावट में सूक्ष्म भेद (चाक्षुष विभेदन) है।

ii) विभिन्न वर्णों की ध्वनियों में विभेद कर सकें — जैसे 'स' और 'श', बार-भार, पड़ना-पढ़ना (ध्वनि श्रव्य विभेदन)।

iii) ध्वनियों का चित्रों, वस्तुओं, आकृतियों के साथ संबंध जोड़ सकें (श्रव्य-दृश्य-साहचर्य)।

iv) दाईं ओर से बाईं ओर लिखने की आदत डाल सकें (दिशात्मकता)।

v) मानक भाषा में उपर्युक्त शब्दावली का प्रयोग कर सकें (शब्द भंडार विकास)।

vi) पुस्तकों का उपयोग करने की जानकारी विकसित कर सकें और उनको संभालने में रुचि दिखा सकें (पुस्तक-व्यवस्था)।

अभ्यास

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।
ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. पढ़ना प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षार्थी को कौन-सी दक्षताओं का अर्जन कर लेना चाहिए ?

.....

.....

.....

.....

.....

4.4 पठन प्रक्रिया : विभिन्न चरण

एक बार जब आपके शिक्षार्थियों ने पठन तत्परता के अंतर्गत अपेक्षित दक्षताएँ प्राप्त कर ली हैं तब आपका अगला कार्य पठन की वास्तविक प्रक्रिया में उनका मार्ग दर्शन करना होगा। इसका यह अर्थ है कि वे पहले वाक्यांशों में और फिर वाक्यों में शब्दों और शब्द समूहों की पहचान की ओर अग्रसर हों। हमारा अंतिम लक्ष्य शिक्षार्थी को गति व बोधगम्यता के साथ पढ़ने योग्य बनाना है।

आप जानते ही हैं कि केवल यांत्रिक पठन का कोई लाभ नहीं। बैलार्ड के शब्दों में "यह केवल मुद्रित सामग्री को उगलना मात्र" है। पठन और बोध दोनों को साथ-साथ चलना चाहिए। परन्तु इस स्तर पर पहुँचने के लिए शिक्षार्थी को कुछ विशिष्ट चरणों से गुजरना होता है। पठन प्रक्रिया का विश्लेषण करने पर आपको पता चलेगा कि शिक्षार्थी मूलतः पठन-प्रक्रिया के चार चरणों से गुजरता है।

ये चार चरण निम्नलिखित हैं :

4.4.1 श्रव्य बिंबों का निर्माण

अपने सरलतम रूप में पठन में शब्दों को देखना और वास्तविक ध्वनियों या श्रव्य बिंबों में उनकी व्याख्या करना सम्मिलित होता है।

जब हम किसी शब्द को देखते हैं तो हमारे मस्तिष्क में उस शब्द का एक विशिष्ट बिंब बन जाता है और जब उस बिंब को ध्वनि में रूपांतरित किया जाता है तो उसे पठन कहते हैं।

4.4.2 श्रव्य बिंबों के साथ विचारों का संयोजन

श्रव्य बिंबों का निर्माण करने के बाद इन बिंबों का विचारों के साथ साहचर्य स्थापित करने की प्रक्रिया का आरंभ होता है। उदाहरण के लिए जब आप 'पुस्तक' शब्द पढ़ते हैं तो पुस्तक का एक बिंब आपके मस्तिष्क में बन जाता है। इस बिंब को ध्वनि में रूपांतरित करते हैं अर्थात् हम शब्द बोलते हैं। हम 'पुस्तक' की ध्वनि के साथ पुस्तक की धारणा को जोड़ते हैं।

4.4.3 अलग-अलग विचारों का समूह में संयोजन

तीसरे चरण में अलग-अलग विचार मिलकर एक समूह बनाते हैं। आइये, इस बात को एक उदाहरण

के द्वारा समझने का प्रयास करें। 'मोहन दूध पीता है'। इस वाक्य में शब्द हैं 'मोहन', 'दूध', 'पीता है'। जैसे-जैसे आप इन शब्दों को पढ़ते हैं वैसे-वैसे आपके मस्तिष्क में इन शब्दों का चाक्षुष बिंब बनता जाता है जिन्हें फिर ध्वनियों में रूपांतरित कर दिया जाता है। इन शब्दों के माध्यम से मस्तिष्क में विचारों की चार इकाइयाँ बन जाती हैं। यह इकाइयाँ हैं — 'मोहन', 'दूध', 'पीता', 'है'। इसके पश्चात् इन्हें एक साथ जोड़कर एक संपूर्ण वाक्य की संकल्पना निर्मित होती है।

इसे संश्लेषण कहते हैं। शिक्षार्थी को एकल विचारों को एक सार्थक समग्र में संयोजित करना आना चाहिए।

4.4.4 शब्द समूहीकरण

एक अनुभवी पाठक की आँखें एक शब्द से दूसरे शब्द पर नहीं बल्कि एक समूह से दूसरे समूह पर जाती हैं। वह कभी शब्द नहीं पढ़ता बल्कि शब्द समूह को पढ़ता है। इससे पठन में प्रवाह आता है। इस प्रकार के पठन को लयात्मक पठन कहते हैं।

उपर्युक्त विचार-विमर्श से आपको यह पता चल गया होगा कि प्रवाह, अर्थग्रहण और लय के अंतिम चरण तक पहुँचने से पूर्व शिक्षार्थी को पठन-प्रक्रिया के प्रत्येक चरण को आत्मसात् करना होता है। प्राथमिक स्तर के शिक्षक होने के नाते आपके लिए इसका आशय है कि आप शिक्षार्थियों में पठन कौशल के विकास के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की योजना इस प्रकार बनाएँ कि शिक्षार्थी एक चरण से दूसरे चरण तक क्रमशः एवं सुव्यवस्थित रूप से अग्रसर हो सकें।

अभ्यास

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।
ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

2. पठन-प्रक्रिया के कौन से चार चरण होते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 पठन के प्रकार

आपने देखा होगा कि पठन कि प्रक्रिया में दो प्रकार का पठन सम्मिलित होता है — (i) मुखर पठन और (ii) मौन पठन। प्रारंभिक स्तर पर पठन मुखर होता है और तीसरी कक्षा के अंत में शिक्षार्थी को मौन पठन से परिचित कराया जाता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि शिक्षार्थी द्वारा मौन पठन की दुनिया में प्रवेश पाने के पश्चात् मुखर पठन अपना महत्त्व खो बैठता है। मुखर पठन और मौन पठन दोनों ही पठन कौशलों के विकास में महत्त्वपूर्ण हैं।

4.5.1 मुखर पठन

मुखर पठन शुद्ध उच्चारण, स्पष्टोच्चारण, अनुतान और भावसहित पढ़ने के उप-कौशलों के शिक्षण और सुधार का एक बहुत ही प्रभावी साधन है।

शिक्षक के नाते आप चाहेंगे कि आपके शिक्षार्थी जैसे-जैसे एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाते जाएं अपनी पुस्तकों में आने वाले सभी शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने में समर्थ होते जाएँ। ऐसा आप मुखर पठन के द्वारा ही कर सकते हैं और साथ ही आप उनकी उपलब्धि की जाँच भी उनके मुखर पठन के माध्यम से कर सकते हैं।

शुद्ध उच्चारण से अतिरिक्त मुखर पठन शिक्षार्थी में स्पष्टोच्चारण की आदत विकसित करने में भी सहायता करता है। कई बार बच्चे शब्दों को अस्पष्ट रूप से बोलते हैं, क्योंकि वे उनके बारे में आश्वस्त नहीं होते। मुखर पठन के द्वारा ऐसी कमियों का पता लगाया जा सकता है। अतः आपको स्पष्ट मुखर पठन पर जोर देना चाहिए क्योंकि इससे यह संदेह नहीं रहेगा कि जो कहा गया है वह सही है या गलत। यद्यपि धारा प्रवाह रूप से पढ़ना अच्छी बात है, किंतु यदि आप शुद्ध अथवा स्पष्ट उच्चारण के बारे में आश्वस्त होना चाहते हैं तो शीघ्रगति से पठन का आग्रह न करें। पठन धीमा और सुस्पष्ट होना चाहिए। पढ़ने की गति सामान्य होनी चाहिए अर्थात् ऐसी गति जिससे जो कुछ पढ़ा जा रहा है श्रोता उसका अर्थ आसानी से समझ सके।

मुखर पठन का दूसरा लाभ यह है कि यह शिक्षार्थी को उचित अनुतान और बल के साथ पठन का प्रशिक्षण देता है। अनुतान भाषा के संगीत-तत्व को दर्शाता है। प्रत्येक भाषा का अपना एक सांगितिक गुण होता है : उसे एक निश्चित लय में बोला जाता है। उच्चारण का संबंध स्वर, अक्षर या व्यंजन की ध्वनि से होता है। दूसरी ओर अनुतान अर्थ, अनुभूति और संवेग को अभिव्यक्त करता है। किसी वाक्य में ध्वनि का उतार-चढ़ाव ही अनुतान को सूचित करता है। यही उतार-चढ़ाव किसी कथन को आदेश या अनुरोध अथवा एक सामान्य कथन बना देता है। अनुतान के कुछ उदाहरण हैं :

दरवाजा बंद था	-	सामान्य कथन
कृपया दरवाजा बंद कर दें	-	विनम्रता पूर्ण कथन
दरवाजा बंद कर दो	-	आदेश

मुखर पठन या बोलने में अनुतान से ही पता चलता है कि वक्ता द्वारा अनुरोध किया गया है, आदेश दिया गया है या एक सामान्य कथन कहा गया है। यह अनुतान ही है जो वाक्य को संवेगात्मक मान प्रदान करता है। अतः शिक्षक के नाते आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आपके शिक्षार्थी मुखर पठन अवश्य करें किंतु यांत्रिक रूप से नहीं।

अनुतान के साथ-साथ आप **बलाघात** पर भी ध्यान दें। इसके शिक्षण का एक अच्छा तरीका यह है कि आप कोई एक वाक्य लें और अलग-अलग शब्दों पर बल देकर यह दिखाएँ कि विभिन्न शब्दों पर बलाघात किस प्रकार वाक्य का अर्थ बदल देता है। उचित रूप से और समझते हुए मुखर पठन के लिए शिक्षार्थियों को प्रशिक्षित करने तथा उनका परीक्षण लेने की दृष्टि से यह एक अत्यंत रुचिकर अभ्यास कार्य हो सकता है। बुद्धिपूर्ण मुखर पठन का आशय है समझ के साथ पढ़ना। यदि शिक्षार्थी ठीक तरह से पढ़ता है अर्थात् उचित अनुतान और बलाघात के साथ पढ़ता है तो निश्चित रूप से यह मान सकते हैं कि उसने उसे समझ भी लिया है। मुखर पठन का अर्थ है लिखित शब्दों में निहित भाव को उभारना और यह तब तक नहीं हो सकता जब तक कि हम उसका अर्थ नहीं समझ लें। किसी अवतरण या शब्दों को न समझ पाना ही हमें निम्नकोटि का पाठक बना देता है।

मुखर पठन के बारे में उपर्युक्त विवेचन से आपको यह भली-भांति स्पष्ट हो गया होगा कि मुखर पठन केवल पठन कौशलों के विकास के लिए ही नहीं, बल्कि शिक्षार्थियों की संपूर्ण भाषाई योग्यता के विकास की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। अतः आपको चाहिए कि आप शिक्षार्थियों के मुखर पठन कौशलों के विकास पर विशेष ध्यान दें। किंतु शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण, अनुतान और बलाघात पर जोर देने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक के रूप में इस संदर्भ में आपकी प्रस्तुति भी आदर्श हो। आप अपने मुखर पठन के उदाहरण से यह सिद्ध कर सकें कि मुखर पठन यांत्रिक क्रिया मात्र नहीं है, यह एक कला है। कोरे/शिक्षण अनुदेशन से यह कला विकसित नहीं हो पाएँगी। आपके मुखर पठन को सुनकर ही शिक्षार्थी उसे सीख पाएँगे।

चित्र 4.1 : दोनों प्रकार की अंगस्थिति – खड़े हुए और बैठे हुए

पढ़ते समय शिक्षार्थी की अंगस्थिति एक अन्य पक्ष है जिस पर आपको ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षार्थियों को सीधे बैठना चाहिए और उन्हें पुस्तक को ऐसे पकड़ना चाहिए कि वह न बहुत ऊँची हो और न बहुत दूर। पुस्तक को सभी तरफ से आँखों से 25-30 से.मी. की दूरी पर रखना चाहिए। यदि वे खड़े होकर मुखर पठन कर रहे हों तो उन्हें सिर ऊँचा करके खड़ा होना चाहिए। पढ़ते समय उन्हें अपना सिर नहीं घुमाना चाहिए। केवल उनकी दृष्टि ही पठन-सामग्री का अनुसरण करे।

अभ्यास

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।
ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3. मुखर-पठन के क्या लाभ हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

4. अनुतान से क्या अभिप्राय है ?

.....

.....

.....

.....

4.5.2 मौन पठन

जैसा कि हम पहले चर्चा कर चुके हैं, पठन प्रक्रिया में दो प्रकार का पठन शामिल है – मुखर पठन और मौन पठन। मौन पठन, पठन कौशल सीखने का अंतिम चरण है। यह एक ऐसा कौशल है जिसकी हमें न केवल भाषा सीखने में ही आवश्यकता पड़ती है बल्कि दूसरे विषयों के लिये भी है। शिक्षार्थी इन विषयों में अपने समय का पूर्णलाभ तब तक नहीं उठा पाएँगें जब तक उन्होंने मौन पठन की कला न सीख ली हो। वास्तविकता तो यह है कि यह एक ऐसा कौशल है जिसकी व्यक्ति को जीवन भर आवश्यकता पड़ती है। शिक्षार्थियों में पठन कौशल के विकास में मौन पठन के प्रशिक्षण को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए।

मौन पठन का मुख्य उद्देश्य किसी अवतरण के विचार को आत्मसात् करना है। यह अवतरण के महत्त्वपूर्ण विचार या विचारों पर ध्यान केन्द्रित करने का एक तरीका है। मुखर पठन करते समय पाठक उच्चारण, अनुतान, वाक्य खंडों, प्रस्तुति की लय आदि पर ध्यान देता है जबकि मौन पठन में उसका पूरा ध्यान अर्थ को समझने पर केन्द्रित होता है। फलतः उसका ध्यान बँटता नहीं है। अतः इससे पाठक अपना पूरा ध्यान अर्थ पर केंद्रित करता है जिससे वह अवतरण में निहित जानकारी या विचारों को उपर्युक्त रूप से आत्मसात् कर लेता है।

मौन पठन के लाभों को देखते हुए शिक्षक के नाते आपको अपने शिक्षार्थियों को यथाशीघ्र मौन पठन में प्रवर्तित करना चाहिए। तीसरी कक्षा के अंत तक आप इसे सरलता से आरंभ करा सकते हैं।

मौन पठन के कौशल का विकास करते समय, आप यह ध्यान रखें कि मौन पठन फुसफुसाते हुए बोलकर पढ़ना नहीं है। आपको अपने शिक्षार्थियों को यह स्पष्ट करना होगा कि मौन पठन क्या होता है। इसके लिए आपको शब्दों को फुसफुसाने या बुदबुदाने की किसी भी प्रवृति पर सावधानीपूर्वक रोक लगाते हुए उन्हें कक्षा में मौन पठन का पर्याप्त अभ्यास कराना होगा।

इसके अतिरिक्त, जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि आँखों को एक शब्द समूह से दूसरे शब्द समूह तक संचलन के लिए प्रशिक्षण देना चाहिए। प्रत्येक समूह में शब्दों की संख्या क्रमशः बढ़ती जानी चाहिए। ओष्ठ-संचलन बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

मौन पठन का एक उद्देश्य गति के साथ पढ़ने की क्षमता का विकास करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने का एक तरीका यह है कि कक्षा को कोई एक अनुच्छेद या एक से अधिक अनुच्छेद एक निश्चित समय में पढ़ने के लिए दिया जाए। इसके लिए आपको यह सुनिश्चित कर लेना होगा कि किसी विशेष अनुच्छेद को मौन रूप से पढ़ने में कितना समय लगेगा। प्रारंभ में आप इस संबंध में समय के बारे में काफी उदारता बरत सकते हैं, फिर धीरे-धीरे उसे कम करते जाएँ। जब किसी अनुच्छेद के मौन पठन का समय समाप्त हो जाए तो आप प्रश्नों के माध्यम से यह जाँच कर सकते हैं कि शिक्षार्थियों ने क्या सीखा है। प्रश्न ऐसे होने चाहिए कि उनका उत्तर पुस्तक की भाषा/शब्दों में न दिया जा सके। मौखिक रूप से याद करके उत्तर देने की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। मौन पठन के लिए समय सीमा निर्धारित करने पर शाब्दिक स्मृति के लिए अधिक गुंजाइश नहीं रहती है। मौन पठन के परीक्षण के लिए शिक्षार्थियों से अनुच्छेद का सार या केंद्रीय भाव भी पूछा जा सकता है।

मौन पठन के विकास और परीक्षण का अन्य तरीका यह है कि पढ़ने से पहले शिक्षार्थियों से एक या दो दिशा-निर्देशक प्रश्न पूछे जाएँ (मौखिक रूप से या श्यामपट्ट पर लिखकर)। इससे शिक्षार्थियों को पढ़ने के प्रयोजन का बोध हो जाएगा और अनुच्छेद को पढ़ते समय यह अहसास रहेगा कि उसमें किन बातों पर ध्यान रखना होगा। तथापि आपके दिशा निर्देशक प्रश्नों का संबंध अनुच्छेद के सामान्य अर्थ या सबसे महत्त्वपूर्ण बिंदुओं से होना चाहिए, उन्हें गौण विवरण पर केंद्रित नहीं होना चाहिए। प्रश्न ऐसे हों जिनका उत्तर आसानी से दिया जा सके और उत्तर लंबे भी न हों।

अभ्यास

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

5. छात्रों को मौन पठन का प्रशिक्षण क्यों देना चाहिए ?

.....

.....

.....

.....

6. मौन पठन का परीक्षण कैसे किया जा सकता है ?

.....

.....

.....

.....

4.6 पठन से संबंधित क्रियाकलाप

यहाँ द्रुतगति से पठन की योग्यता के संवर्धन के लिए कुछ खेल/क्रियाकलाप दिए जा रहे हैं।

4.6.1 मानचित्र अभ्यास

मानचित्रों के माध्यम से आप शिक्षार्थियों में शीघ्रता से शब्दों को पहचानने की आदत का विकास कर सकते हैं। उदाहरणस्वरूप उन्हें नीचे दिए गए मानचित्र को देखने के लिए कहें और उसमें दर्शाए गए स्थानों व स्थितियों के बारे में उनसे प्रश्न पूछें। शिक्षार्थी उन्हें पहचाने एवं उनका नाम बताएँ। इससे उनके शब्द भंडार के विकास में भी मदद मिलेगी।

मानचित्र संबंधी प्रश्न :

1. दवाई की दुकान कहाँ होगी ?
2. आप सब्जी कहाँ से खरीद सकते हैं ?
3. सिनेमाघर कहाँ पर है ?
4. पुस्तकालय कहाँ है ?

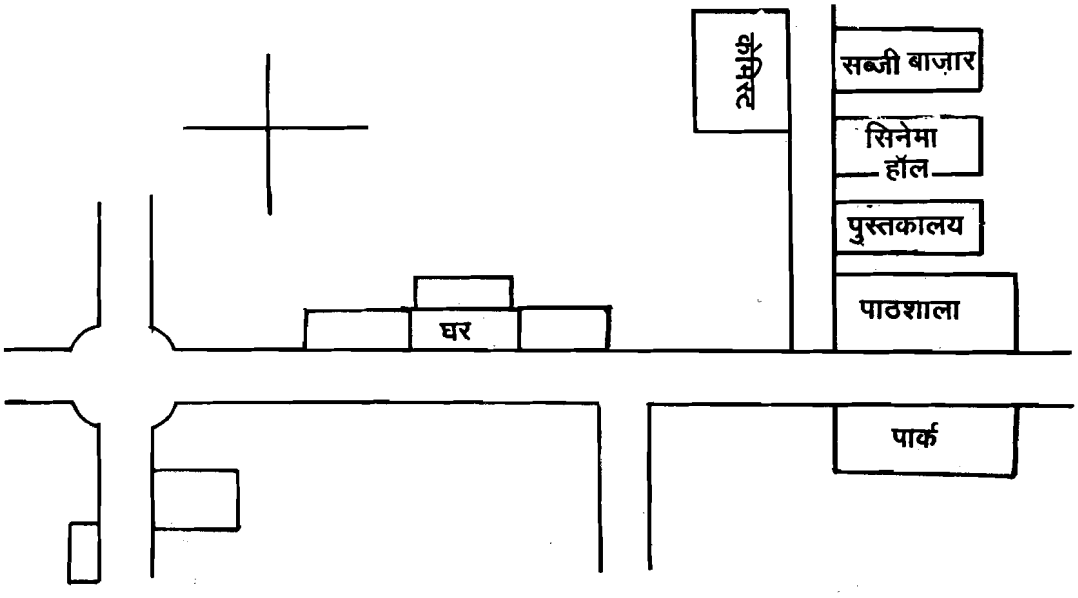

4.6.2 श्यामपट्ट अभ्यास

श्यामपट्ट पर आप यूँ ही कुछ शब्द लिखें। फिर कुछ ऐसे वाक्य बोलें जिनमें इन शब्दों का प्रयोग किया गया हो। शिक्षार्थियों से उन शब्दों को पहचानने एवं उन पर घेरा लगाने के लिए कहें।

श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखें

हरा	मैं	करता	है	वह
मोजे	करता	हूँ	पजामा	
लाल	पहनता	हूँ	पीला	और
हम	लोग	हैं	तुम	करना
एक	कोट	पहने	हुए	गीला
जूते	स्वेटर	काली	कमीज	

अब उन्हें नीचे लिखे वाक्यों जैसे कुछ वाक्य दें और श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों में से उन्हें पहचानकर उन पर घेरा लगवाएँ।

वह हरे मोजे पहने हुए है। वह लाल जैकेट पहनता है।

इस क्रियाकलाप को समूह-खेल के रूप में भी कराया जा सकता है। उपर्युक्त सभी क्रियाकलाप पठन बोध एवं पठन गति को बढ़ाने में सहायता करेंगे।

अभ्यास

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।
ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

7. शब्द भंडार के विकास में मानचित्र अभ्यास किस प्रकार सहायता कर सकता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

4.7 पठन दोष

शिक्षक के रूप में, आपको अपने शिक्षार्थियों में पठन की कुछ समस्याएँ देखने को मिली होंगी। उनमें से कुछ समस्याएँ इस प्रकार की हो सकती हैं।

i) पढ़ते समय शब्द पर उँगली या पेंसिल रखने की आदत।

ii) केवल नेत्र संचलन न करके सिर को एक तरफ से दूसरी तरफ घुमाने की आदत।

iii) मौन पाठ करते समय शब्दों को बोलना (होंठों को हिलाना)।

iv) किसी वाक्य में एक बार में शब्द समूह या वाक्यांश को न देखकर केवल एक ही शब्द को देखना।

v) पढ़ते समय बार-बार वाक्य के प्रारम्भ पर लौटना।

आपको इन आदतों को सुधारने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित तरीके उपयोगी हो सकते हैं : क) शिक्षार्थियों को इन कमियों का बोध कराना; और ख) उन्हें सही ढंग से पढ़ने का पर्याप्त अभ्यास करवाना।

अभ्यास

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।
ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

8. कुछ पठन दोषों के नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

9. ये दोष कैसे दूर किए जा सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4.8 पठन बोध के प्रकार

बोधगम्यता पठन का एक अत्यत महत्त्वपूर्ण पक्ष है। पठन-प्रक्रिया के सभी पक्ष अंततः पठन बोधगम्यता का प्रवर्धन करते हैं। बोधगम्यता में तथ्यात्मक तथा निष्कर्षात्मक दोनों पक्ष आते हैं।

4.8.1 तथ्यात्मक बोधन

इससे अभिप्राय तथ्यों को पहचानने की व उन्हें फिर से स्मरण करने की योग्यता से है। इसके बिना किसी अवतरण को पढ़ना निरर्थक होता है। उदाहरणार्थ यदि आप कोई कहानी पढ़ रहे हैं तो आवश्यक है कि आप निम्नलिखित का पुनःस्मरण कर सकें :

- कहानी के पात्रों के नाम तथा उसकी विशेष घटनाएँ इत्यादि
- घटनाओं का क्रम
- कहानी से संबंधित वर्णनात्मक कथन
- कहानी में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त प्रमुख विचार बिंदु।

4.8.2 निष्कर्षात्मक (आनुमानिक) बोधन

इससे तात्पर्य है प्रदत्त सामग्री के आधार पर अनुमान लगाना या निष्कर्ष निकालना।

उदाहरण के लिए अगले पृष्ठ पर दी गई कहानी को पढ़िए।

"एक बार की बात है एक लोमड़ी जंगल में एक गड्ढ़े में गिर गई। उसने गड्ढ़े में से बाहर निकलने की पूरी कोशिश की, परन्तु सफलता हाथ न लगी। कुछ समय पश्चात् उसे कुछ पदचाप सुनाई दिए। एक बकरी वहाँ से गुजर रही थी। उसने गड्ढ़े में झाँका, और लोमड़ी को गड्ढ़े में देखकर हैरान रह गई। उसने लोमड़ी से पूछा, "आप इसं गडढे में क्या कर रही हैं ?" क्या आपको दिखाई नहीं देता ? मैं हरी घास खा रही हूँ।" लोमड़ी ने कहा। इस पर बकरी ने कहा, "अच्छा, फिर तो मैं भी हरी घास खाऊँगी", और इतना कहकर गड्ढ़े में कूद पड़ी। लोमड़ी झट से बकरी की पीठ पर चढ़ी और गड्ढ़े से बाहर निकल गई।"

निम्नलिखित प्रश्न तथ्यात्मक बोध का परीक्षण करते हैं :

i) लोमड़ी के साथ क्या घटना घटी ?

ii) गड्ढ़े के पास से कौन गुजरा ?

क्या आप कुछ ऐसे प्रश्न बना सकते हैं जिनके आधार पर इस बात का निश्चय हो जाए कि शिक्षार्थी को तथ्यों का बोध हो गया है ?

निम्नलिखित प्रश्न निष्कर्षात्मक प्रश्न हैं :

i) क्या लोमड़ी घास खा रही थी ?

ii) क्या बकरी बुद्धिमान थी ?

iii) दोनों में कौन चालाक था, लोमड़ी या बकरी ?

अभ्यास

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।
ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

10. तथ्यात्मक बोध से क्या अभिप्राय है ?

.....

.....

.....

.....

.....

11. निष्कर्षात्मक बोध से क्या अभिप्राय है ?

(अपने क्षेत्र से कोई प्रचलित कहानी चुनें और तथ्यात्मक बोधगम्यता तथा निष्कर्षात्मक बोधगम्यता दोनों के परीक्षण के लिए उसका उपयोग करें।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.9 गहन एवं विस्तृत पठन

मान लीजिए आपके पास तीसरी कक्षा के शिक्षार्थियों का एक समूह है, जिसे एक छोटी सी कहानी वाला गद्यांश पढ़ना है। आप उन शिक्षार्थियों को कैसे पढ़ाएँगे ? गद्यांश नीचे दिया जा रहा है :

प्रातःकाल का समय था। धूप खिली हुई थी। श्री तागी, नाबम् और याना सैर करने के लिए निकले थे। अचानक याना रूकी। वह सहमी हुई थी।

वह क्या है ?

वह बुदबुदाई, "कोई खट-खट कर रहा है।"

"खट-खट..." और उन सबने चारों ओर देखा। पहले तो उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। कुछ देर बाद नाबम् ने भूरे और काले से रंग का एक छोटा पक्षी पेड़ के तने पर बैठा देखा। उसकी लाल कलगी और लम्बी चोंच थी। वह पक्षी ही खट-खट की आवाज कर रहा था। यह पेड़ की छाल पर ज़ोर-ज़ोर से चोंच मार रहा था। तब श्री तागी ने कहा, "यह कठफोड़वा पक्षी है।" हम इसे इसलिए नहीं देख पाए थे, क्योंकि उसका रंग पेड़ की टहनी के रंग जैसा ही है।"

यदि इस गद्यांश को गहन पठन के लिए पढ़ाना है अर्थात् इसके द्वारा शब्द भंडार, भाषा कौशल और बोधन का विकास करना है तो नीचे सुझाई गई प्रक्रिया अपनानी होगी।

i) सर्वप्रथम कठिन अपरिचित शब्दों को छाँट लेंगे। जैसे 'सहमी हुई', 'बुदबुदाई', 'कलंगी' आदि। जिन शब्दों के अर्थ, संदर्भ से समझ आ गए हों उनके अर्थ बताने की आवश्यकता नहीं होगी।

ii) छाँटे हुए कठिन शब्दों के अर्थ बताने के लिए (क) निदर्शन का सहारा लिया जा सकता है, जैसे – 'बुदबुदाई'; (ख) कोई दूसरा शब्द देकर या चित्र दिखाकर; (ग) पर्यायवाची और विलोम शब्द (रात और दिन) लेकर और अंततः इनमें से जब कोई भी उपाय कारगर नहीं हो तो दो-तीन बार वाक्य में प्रयोग कर सकते हैं।

iii) शिक्षार्थी ने जिन शब्दों को सीखा है, उनको पक्का करने के लिए उन शब्दों पर अभ्यास भी दिए जा सकते हैं। यह अभ्यास सरल हो सकते हैं, जैसे – शब्दों का अर्थ से मिलान करना, रिक्त स्थान की पूर्ति करना, तीन या चार अर्थों में से सही अर्थ चुनना, अथवा शब्द को वाक्यों में प्रयोग करना।

iv) इस गद्यांश के माध्यम से कुछ भाषायी तत्व भी सिखाए जा सकते हैं जैसे – 'लाल', 'छोटा', 'लम्बा' आदि शब्दों के द्वारा विशेषण-शिक्षण। इस प्रकार के अन्य शब्दों को निर्दिष्ट करके उनका अभ्यास भी करवाया जा सकता है।

v) क्योंकि यह गद्यांश कक्षा तीन के शिक्षार्थियों के लिए है, अतः इसका मौन पठन करवाया जा सकता है और फिर बोध परीक्षण के लिए प्रश्न पूछे जा सकते हैं। प्रश्न तथ्यात्मक तथा निष्कर्षात्मक दोनों प्रकार के होने चाहिए।

तथ्यात्मक और निष्कर्षात्मक प्रश्न बनाने के लिए आप इस अनुच्छेद का उपयोग भी कर सकते हैं और अन्य अनुच्छेद/लघु कथा या क्षेत्रीय कथा को भी ले सकते हैं।

यदि आप इस गद्यांश अथवा किसी अन्य अवतरण का उपयोग विस्तृत अध्ययन के लिए कर रहे हैं, तो भाषा अथवा शब्दावली अभ्यास कराने की आवश्यकता नहीं होगी; क्योंकि विस्तृत अध्ययन का प्रयोजन मनोरंजन के लिए पठन है। अतएव केवल बोध प्रश्न ही पूछे जाएँगे।

अभ्यास

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।
ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

12. गहन पठन और विस्तृत पठन के लिए प्रयुक्त प्रक्रियाओं में क्या अंतर होता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

4.10 पठन बोध में आने वाली समस्याएँ

कभी-कभी शिक्षार्थियों को पाठ्य-वस्तु/पाठ्यसामग्री के कठिन होने के कारण पठन समस्याओं का सामना करना पड़ जाता है। शिक्षक होने के नाते, आप वस्तुतः शिक्षार्थियों के मार्गदर्शक हैं। आप निम्नलिखित तरीकों के द्वारा पाठ्य-सामग्री को समझने में उनकी सहायता कर सकते हैं।

- शिक्षार्थियों को अवतरण/लघु कथा का सारांश देकर,
- कठिन शब्दों की व्याख्या करके,
- शिक्षार्थियों को पाठ्य-वस्तु से तथ्यों को प्राप्त करने के लिए कहकर, तथा
- पाठ्य-वस्तु की रूपरेखा प्रस्तुत करके जिससे अवतरण का पुनः पठन करते समय उसे समझने में शिक्षार्थियों को सहायता मिल सकेगी।

4.11 सारांश

इस इकाई के अंतर्गत हमने निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया है :

i) पढ़ना सीखने के उद्देश्य;
ii) पठन का महत्त्व;
iii) पठन तत्परता क्या है;
iv) पठन-प्रक्रिया के चरण;
v) मुखर पठन और मौन पठन के लाभ;
vi) पठन दोष;
vii) बोधन के प्रकार; और
viii) गहन पठन तथा विस्तृत पठन की शिक्षण विधियाँ।

4.12 इकाई के अंत में अभ्यास

इस अवतरण को पढ़िए

एक पेंगुइन माँ अपने बच्चे को पहचानती है। अलग-अलग पेंगुइन के दर्जनों बच्चे एक साथ समूह में रहते हैं। बड़े बच्चे अपने खाने के लिए मछली पकड़ने समुद्र में जाते हैं। जब कोई माँ वापस आती

है, तो वह सभी भूखे बच्चों के समूह में से होकर गुजरती है परन्तु अपने बच्चों के अतिरिक्त अन्य बच्चों को खाना नहीं खिलाती है। पेंगुइनों पर अध्ययन करने वाले यद्यपि पूरी तरह निश्चित तो नहीं हैं फिर भी उनका अनुमान है कि पेंगुइन माता-पिता अपने बच्चे को उनकी आवाज़ और उनकी विशिष्ट आकृति एवं आकार से पहचान लेते हैं।

ऐसा लगता है, पेंगुइन-शिशु अपने माता-पिता को उनकी आवाज से पहचानता है। जब बच्चे की माता या पिता उसे पुकारते हैं, तो वह दौड़कर आ जाता है। जब कोई पेंगुइन-शिशु या बत्तख का बच्चा अंडे में से बाहर आता है, तो सबसे पहले वह एक बड़ी काली आकृति को देखता है जो उसकी माँ की आकृति होती है। तब से वह उस आकृति को पहचानने लगता है और उसके पीछे-पीछे चलता रहता है। परन्तु यदि बत्तख का बच्चा सर्वप्रथम किसी कुत्ते की आकृति को देख ले तो वह उस कुत्ते के आगे-पीछे उसी प्रकार से चलता रहेगा जैसे वह उसकी माँ हो।

1. इस अवतरण में से कठिन शब्दों को चुनें और उन्हें स्पष्ट करें।
2. इस अवतरण का प्रयोग वर्तमान काल के शिक्षण के लिए करें।

   i) वर्तमानकालिक क्रियाओं को रेखांकित करें।
   ii) वर्तमान काल का ज्ञान कराने के लिए एक अभ्यास बनाएँ।
3. उपर्युक्त अवतरण के तथ्यों पर प्रकाश डालने के लिए प्रश्न बनाएँ।
4. अवतरण के आधार पर दो निष्कर्षात्मक प्रश्न बनाएँ।

4.13 अभ्यासांतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

1. शिक्षार्थी वर्णमाला के वर्णों की आकृतियों और बनावट के बीच तथा वर्णमाला की ध्वनियों के बीच विभेद कर सकता है। शिक्षार्थी को प्रत्येक ध्वनि का उपर्युक्त वर्ण से मिलान करना आना चाहिए और उसके पास अपनाप एक पर्याप्त शब्द भंडार होना चाहिए।

2. क) श्रव्य बिंबों का निर्माण

   ख) श्रव्य बिंबों के साथ विचारों का संयोजन

   ग) अलग-अलग विचारों का समूह बनाना

   घ) शब्दों का समूहीकरण

3. शिक्षार्थियों के शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण, अनुतान और भावपूर्ण पठन के उप-कौशलों में सुधार लाने की दृष्टि से बोलकर पढ़ना काफी उपयोगी होता है।

4. अनुतान भाषा की संगीतात्मकता को इंगित करता है क्योंकि हर भाषा की अपनी संगीतात्मकता होती है।

5. मौन पठन में सारा ध्यान अर्थ बोध पर होता है। अतः ध्यान बँटने की स्थिति नहीं आती। इसमें पाठक का सारा ध्यान अर्थ पर होने के कारण सूचनाओं का बेहतर आत्मीकरण होता है।

6. किसी अनुच्छेद विशेष के मौन पठन के बाद आप प्रश्नों द्वारा यह परीक्षण कर सकते हैं कि उन्होंने क्या सीखा है, लेकिन प्रश्न इस प्रकार के होने चाहिए जिनका उत्तर वे पुस्तक की भाषा में न दे पाएँ।

7. जब आप किसी शिक्षार्थी को किसी मानचित्र का प्रेक्षण करने के लिए कहते हैं और उसमें दिखाए

गए स्थानों या अवस्थितियों पर उससे प्रश्न पूछते हैं तो वह उनको पहचानेगा और उनका नाम बताएगा। इससे उसके शब्द भंडार में वृद्धि होती है।

8. i) किसी शब्द को उंगली या पेंसिल से इंगित करने की आदत

   ii) सिर को एक दिशा से दूसरी दिशा में घुमाने की आदत

   iii) बार-बार आरंभ पर वापस आना आदि।

9. शिक्षार्थी को अपने दोषों से परिचित कराकर और उन्हें शुद्ध पठनन का काफी अभ्यास कराकर।

10. तथ्यों को पहचानने और प्रत्यास्मरण की योग्यता जिनके बिना किसी पठन-अवतरण का कोई अर्थ नहीं होगा।

11. दी हुई सामग्री में से अनुमान या निष्कर्ष निकालना। आप अपने क्षेत्र की कोई कहानी चुन सकते हैं।

12. गहन पठन में पहला चरण है — कठिन शब्दों को पहचानना और उनके अर्थ जानना। सीखे गए शब्द भंडार को सुदृढ़ बनाने के लिए अभ्यास कार्य दिया जा सकता है। साथ ही उसी लेखांश को कुछ भाषिक तत्वों के शिक्षण में भी प्रयुक्त किया जा सकता है। मौन पठन के पश्चात्, बोध प्रश्नों द्वारा परीक्षण किया जा सकता है। लेकिन विस्तृत पठन में भाषा या शब्द भंडार संबंधी कार्य अभ्यास नहीं किया जाता है क्योंकि विस्तृत पठन का प्रयोजन मनोरंजन के लिए पठन होता है।